SAMPURNANAND SANSKRIT VISHWAVIDYALAYA
VARANASI (U.P.) - 221002

3.3.1

सम्बद्धसंस्थाद्वारा एका पारिस्थितिकी विरचिता यत्र अभिनवस्य ज्ञानस्य सर्जनार्थं सम्प्रेषणार्थं च अभिनवज्ञाननिष्पत्तिकेन्द्राणि/ अनुसन्धानप्रयोगशालाः/पाण्डुलिपिसंरक्षणकेन्द्राणि/विषयाधारितजलसम्पर्कः/अध्यापनाध्ययनकेन्द्राणि/सामूहिकान्तर्जालपाठ्यक्रमाङ्कनशाला/ एन्.आर्.सी. तथा अन्ये उपायाः उपलभ्यन्ते।

Institution has created an eco-system for innovations including Incubation centre/ Research Labs/Manuscript repositories/subject based networks/teaching learning centers (TLC)/MOOCS studio/NRC and other initiatives for creation and transfer of knowledge

संस्थान ने इनक्यूबेशन सेंटर/रिसर्च लैब्स/पांडुलिपि रिपॉजिटरी/विषय आधारित नेटवर्क/टीचिंग लर्निंग सेंटर्स (टीएलसी)/एमओओसीएस स्टूडियो/एनआरसी और ज्ञान के सृजन और हस्तांतरण के लिए अन्य पहलों सहित नवाचारों के लिए एक इको-सिस्टम बनाया है

1. **अनुसंधान प्रयोगशाला** – सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालयस्य ज्योतिषविभागे अनुसन्धानप्रयोगशाला वर्तते। अत्र प्रयोगशालायां नैकानि यन्त्राणि सन्ति, यथा शंकु-यन्त्रं, प्रोजेक्टर-यन्त्रं, दूरदर्शी-यन्त्रं सूक्ष्मावलोकन-यन्त्रम्-, सम्राट्-यन्त्रं, तारामण्डलं, एवं विधानि यन्त्राणि अनुसन्धान प्रयोगशालायां सन्ति। विश्वविद्यालये अन्या अपि प्रयोगशालाः सन्ति। यथा- वेदविभागे ऋगादि वेदेषु प्रतिपादितानां स्वाभीष्टानां कार्याणां सिद्ध्यर्थं श्रौत-स्मार्तविधिप्रयोगशाला (यज्ञशाला) वर्त्तते। तथा गृहविज्ञानविभागे गृहविज्ञान-प्रयोगशाला, भाषाविज्ञानविभागे भाषाविज्ञानप्रयोगशाला च विद्येते।

2. **पाण्डुलिपिसंरक्षणकेन्द्रम्** – अस्मिन् विश्वविद्यालये विश्वप्रसिद्धं पाण्डुलिपिनां संरक्षणकेन्द्रं 'सरस्वती भवनं' विद्यते। अत्रैव परिसरे एक: सरस्वतीभवन पुस्तकालय अपि अस्ति। अत्र लक्षाधिका: संख्याका: पाण्डुलिपय: सन्ति। अस्मिन् विश्वविद्यालये पाण्डुलिपीनां संरक्षणार्थम् एकं बृहद् 'सरस्वती-भवनम्' नामकं भवनम् वर्तते। तत्र संस्कृतस्य वैदिकवाङ्मयस्य च अनेका: पाण्डुलिपय: संरक्षिता: सन्ति। विशेषत: यस्मिन् स्वर्णाक्षरै: 'श्रीमद्भगवद्गीता' अपि अस्ति अथ च विविधासु प्रान्तीयलिपिभाषासु च आबद्धानां पाण्डुलिपीनां सहस्राधिक संख्या वर्तते। अस्य विश्वविद्यालयस्य विविधानां विश्वविद्यालयानां च शोधच्छात्राणां कृते तत्तद् विषयानुरूपं हस्तलेखा: पाण्डुलिपयश्च शोधकार्यार्थं अनुमन्यन्ते। तदनुसारं शोधच्छात्रा: निर्देशकस्य मार्गदर्शने शोधोपाधिं प्राप्तुं पाण्डुलिपीनां सम्पादनम्, अनुशीलनम्, परिशीलनम्, तुलनात्मकम्, समीक्षणं च कुर्वन्ति। विश्वविद्यालये सेवारता आचार्या:, सहाचार्या: सहायकाचार्या अपि पाण्डुलिपीनां दुर्लभग्रन्थानां च सम्पादनं कुर्वन्ति। एतदतिरिक्तं राष्ट्रीय-अन्ताराष्ट्रियस्तरेपि शोधार्थिभ्य: शोधसम्पादनार्थं पाण्डुलिपय: प्रदीयन्ते।

3. **विषयाधारितजालसम्पर्क**

अस्मिन् विश्वविद्यालये विषयाधारितजालसम्पर्कस्य व्यवस्था विद्यते। अयं विश्वविद्यालयः परम्परायाः अस्ति। अर्थात् अत्र प्रचाल्यमानाः प्रायशः सर्वे परस्परं समबद्धाः सन्ति। अत्र विषये आचार्याः वदन्ति (काणादं पाणिनीयं च सर्व शास्त्रोपरापकारकम्) इति वचनानुसारं सर्वेषां शास्त्राणां परिज्ञानार्थं व्याकरणस्य वैशेषिकस्य (न्यायशास्त्रस्य)च महती उपयोगिता भवति। तथा सर्वेषां व्याकरण-ज्योतिष-निरुक्त-छन्द-कल्पादि शास्त्राणाम् अध्ययनम् ऋगादि वेदानां

सम्यक् परिज्ञानार्थम् आवश्यकं भवति। अतः अत्रत्याः छात्राः व्याकरणादि शास्त्राणां लघुकौमुदी-तर्कसंहग्रादि ग्रन्थान् अधीत्य वेदान्त-साहित्यादि शास्त्राणाम् अध्ययनं कर्तुं समर्थाः भवन्ति। अतएव काव्यप्रकाशकारेण आचार्यमम्मटेन काव्यप्रकाशे- प्रथमे ह विद्वांसः वैयाकरणाः इति प्रोक्तम्। तथा इदीनीं भारतसर्वकारेण नवीना राष्ट्रीया शिक्षानीतिः तत्तद् विश्वविद्यालयानां पाठ्यक्रमेषु निर्धारिता। नवीनराष्ट्रीयशिक्षानीतौ अपि पृथक्-पृथक् विषयाणां परिज्ञानं भवेत्, एतादृशी व्यवस्था प्रदत्ता। किन्तू अस्मिन् विश्वविद्यलये इयं व्यवस्था प्राक्कालादेव आसीत्। अतः कथितुं शक्यते यत् विश्वविद्यालयेस्मिन् विषयाधारितजालसम्पर्कस्य उत्कृष्टता विद्यते।

4. **अध्ययनाध्यापनकेन्द्राणि-** अस्मिन् विश्वविद्यालये छात्राध्ययनाध्यापनकेन्द्राणि बहूनि सन्ति। यथा- श्रमणविद्यासंकाय-भवनम्- पाणिनि-भवनम्- बहुसंकाय-भवनम्, आयुर्वेद-भवनम्, विज्ञान-भवनम् वेद-भवनञ्चेति अध्ययनाध्यापनकेन्द्राणि प्रतिष्ठितानि सन्ति। यत्र वेद- व्याकरण-साहित्य, प्राचीनराजशास्त्र- ज्योतिष-धर्मशास्त्र- मीमांसा- पुराण- वेदान्त-न्यायदर्शन- तुलनात्मकधर्मदर्शन- पालि- प्राकृत आदि शास्त्रीयग्रन्थानां तथा सामाजिकविज्ञानराजशास्त्र-अर्थशास्त्र-इतिहास- पुरातत्व- हिन्दी- विज्ञान-गृहविज्ञानादीनाम् अथ च आंग्लभाषादि- आधुनिकविषयाणां- फ्रैंच-रसियन-तिब्बत-नेपाली आदि विषयाणाम् अपि सम्यक्प्रकारेण ख्यातिलब्धै: तत्तद्विषयविशेषज्ञै आचार्यै: अध्ययनाध्यापन- कर्माणि कार्यन्ते।

5. **सामूहिकान्तर्जालपाठ्यक्रमाङ्कनशाला**

अस्मिन् विश्वविद्यालये सामूहिकान्तर्जालपाठ्यक्रमाङ्कनशाला विद्यते। अस्मिन् विश्वविद्यालये स्थितस्य ऑनलाईनसंस्कृतप्रशिक्षणकेन्द्रस्य माध्यमेन देशे- विदेशे स्थिता संस्कृतस्य जिज्ञासव: सप्तशतसंख्याकाः छात्राः पंजीकृताः सन्ति।, अत्र प्रचाल्यमानानां पाठ्यक्रमाणाम् उपयोगिताम् अभिलक्ष्य सततं छात्राणां सख्या वर्धमाना वरीवर्ति। अस्मिन् सामूहिकान्तर्जालपाठ्यक्रमाङ्कनकेन्द्रे त्रैमासिकपाठ्यक्रम:, प्रमाणपत्रीय: पाठ्यक्रम:, षाड्मासिक: पाठ्यक्रम: एकवर्षीयात्मक: पाठ्यक्रमश्चेति डिप्लोमापाठ्यक्रमा: प्रचलन्ति। एतै: पाठ्यक्रमै: एते विषया: निर्धारिता: सन्ति। यथा - १. संस्कृतभाषाशिक्षणम्, २. अर्चक:, ३. कर्मकाण्ड:, ४. ज्योतिषकुण्डलीविज्ञानम्, ५. वास्तुविज्ञानम्, ६. वेदविज्ञानम्, ७.

योग:, ८. दर्शनम्, ९. व्याकरणम्, १०. वेदान्तशास्त्रम्। एते विषया: अन्तर्जालमाध्यमेन पठितुं शक्या:। तत्तद् विषयेषु कृतभूरिश्रमा आचार्या: एतान् विषयान् पाठयन्ति। एतान् विषयान् कोऽपि जिज्ञासु: पठितुं शक्यते। अत्र विशेषमिदं वर्तते यत् एतेषां पाठ्यक्रमाणां अध्ययने पञ्जीकरणार्थं संस्कृतभाषाया: अनिवार्यता नास्ति। अत: अत्र जनसामान्यानां जनानां कृते उपर्युक्तानां पाठ्यक्रमाणां परिज्ञानाय सौविध्यं वर्तते।

SAMPURNANAND SANSKRIT VISHWAVIDYALAYA
VARANASI (U.P.) – 221002

For Supporting documents of QlM 3.3.1

Incubation centre के रूप में IKS

प्रशिक्षु योजना भारतीय ज्ञान परंपरा केंद्र

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी

उक्त योजना के निम्नवत् उद्देश्य हैं-

- भारतीय ज्ञान परंपरा केंद्र के द्वारा छात्रों को शैक्षणिक लाभ पहुंचाना
- भारतीय ज्ञान परंपरा का परिचय छात्रों को देना
- भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रति छात्रों को जागरूक करना
- भारतीय ज्ञान राशि में शोध हेतु छात्रों को प्रेरित करना
- भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रति छात्रों की रूचि बढ़ाना
- अध्येता छात्रों में शोध प्रवृत्ति को जागृत करना
- अध्येता छात्रों की शोधात्मक प्रवृत्ति को बढ़ावा देना
- अध्येता छात्रों में शोध अभिवृत्ति का विकास करना
- भारतीय ज्ञान परंपरा केंद्र से छात्रों को संबद्ध करना

भारतीय ज्ञान परम्परा के अन्तर्गत मुख्य गवेषक के साथ कार्य करते हुए प्रशिक्षु

भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय की टीम ने किया आईकेएस केन्द्र की समीक्षा

विश्व गुरु भारत की संकल्पना आई के एस केन्द्रों से होगी पूरी : प्रो मोहन राघवन

परफेक्ट मिशन

वाराणसी। संस्कृत विश्वविद्यालयों तथा पारंपरिक ज्ञान संस्थानों को भारतीय ज्ञान परंपरा की अक्षुण्णता के लिए आगे आना निश्चित ही देश की शैक्षणिक नेतृत्व को तरासते हुए विश्वगुरु भारत की संकल्पनाओं को साकार होने का शुभ संकेत है। यहाँ से भारतीय, भारतीयता और भारत का वास्तविक संदेश वैश्विक स्तर पर स्थापित होगा।सांँस्कृतिक परंपरा और हमारी संस्कृति का संदेश भी इसी केंद्र से अंतरराष्ट्रीय क्षितिज पर स्थापित होगा। उक्त विचार आईआईटी हैदराबाद के प्रो मोहन राघवन ने सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी के परिसर में संचालित भारतीय ज्ञान परंपरा केंद्र के कार्यों का निरीक्षण करते हुए में व्यक्त किया।शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार द्वारा गठित आईकेएस केन्द्रों के कार्यों के समीक्षा हेतु प्रोफेसर मोहन राघवन की अध्यक्षता में पञ्च सदस्यीय रिव्यू कमेटी का आगमन विश्वाविद्यालय परिसर में स्थापित भारतीय ज्ञान परंपरा केंद्र में सोमवार को हुआ।

दिल्ली से आई हुई टीम ने सर्वप्रथम भारतीय ज्ञान परंपरा केंद्र के समन्वयक प्रो. हरी प्रसाद अधिकारी जी के नेतृत्व में विश्वविद्यालय स्थित सरस्वती ग्रंथालय में शिल्पशास्त्र विषयक पांडुलिपियों का अवलोकन किया। समिति के सदस्य डॉ. मधुसूदन मिश्र ने मुख्य भवन स्थित वेधशाला का पर्यवेक्षण करवाया। भारतीय ज्ञान परंपरा केंद्र में जाकर केंद्र में हो रहे शोध कार्यों का समीक्षण किया। केंद्र के प्रधान गवेषक डॉ. ज्ञानेंद्र सापकोटा के द्वारा अनुसंधान और शैक्षणिक कार्यों को प्रस्तुत किया गया। डॉ सापकोटा द्वारा केंद्र में हो रहे आयोजनों एवं गतिविधियों को विस्तार से बताया गया। अभी तक 17 पांडुलिपियों पर शोध कार्य पूर्ण हो चुके हैं। शिल्पकला व्याख्यानमाला के अंतर्गत 30 व्याख्यानों की परिकल्पना है जिनमे अब तक 12 व्याख्यान संपन्न हुए हैं,15 ग्रंथों पर टिकालेखन तथा शोधपत्र लेखन का भी कार्य केंद्र द्वारा किया जा रहा है। पांडुलिपियों के अनुलेखन एवं टिकालेखन के लिए प्रशिक्षु योजना भी संचालित है। प्रधान गवेषक डॉ ज्ञानेंद्र सापकोटा ने केंद्र के प्रस्तावित भविष्य के कार्ययोजनाओं का भी चर्चा किया। ज्ञातव्य हो कि शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार द्वारा वर्ष 2021- 2022 में देशभर में भारतीय ज्ञान परंपरा को बढ़ावा देने के लिए 15 केन्द्रों की स्थापना हुई थी जिसमे से इस संस्था के भारतीय ज्ञान परंपरा को शिल्पशास्त्र के पांडुलिपि ग्रंथों पर कार्य करने के लिए परियोजना प्रदान की गई थी।

परियोजना के दो वर्ष के समाप्ति पर शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार द्वारा भारतीय ज्ञान परंपरा केन्द्रों के कार्यों की समीक्षा के लिए रिव्यू कमेटी गठित की गई है। इस समिति का देश भर में स्थापित केन्द्रों के कार्य की समीक्षा हेतु फरवरी मास में प्रवास चल रहा है।

आईकेएस केन्द्र की समीक्षा के लिये भारत सरकार के शिक्षा मन्त्रालय से आये हुए सदस्यों के साथ प्रधान गवेषक-13.03.24

अनुसंधान में सहयोगी सम्राट यन्त्र

अनुसंधान में सहयोगी तारामण्डल यन्त्र को समझते हुए शोधछात्र-2024

Registrar
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi

अनुसंधान में सहयोगी सूक्ष्मावलोकन यन्त्र

अनुसंधान में सहयोगी शंकु यन्त्र

अनुसंधान में सहयोगी भाषा विज्ञान प्रयोगशाला-2023

अनुसंधान में सहयोगी पाण्डुलिपि संरक्षण एवं संसाधन केन्द्र (सरस्वती भवन)

Registrar
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi

अनुसंधान में सहयोगी पाण्डुलिपि संरक्षण एवं संसाधन केन्द्र (विस्तार भवन)

पाण्डुलिपि संरक्षण एवं संसाधन केन्द्र (सरस्वती भवन) में जानकारी प्राप्त करते हुए शोधछात्र-2023

Registrar
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi

पाण्डुलिपि संरक्षण एवं संसाधन केन्द्र (सरस्वती भवन) में जानकारी प्राप्त करते हुए शोधछात्र- 2024

अध्ययन-अध्यापन-कक्ष

सामूहिकान्तर्जालपाठ्यक्रमाङ्कनशाला में ऑनलाईन अध्ययन करते हुए प्रतभिागीगण

विश्वविद्यालय परिसर स्थित यज्ञशाला में अध्यापक के साथ हवन सम्पन्न कराते हुए शोधछात्र

के

विश्वविद्यालय परिसर स्थित यज्ञशाला में हवन के पश्चात् पूजा करते हुए शोधछात्र

Registrar
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi